किशोरावस्था के छात्रों का नशे की लत से ग्रसित होने के कारणों का अध्ययन

डॉ. सुप्रीत कौर* और पूनम चालिया**

सारांश

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। प्रकृति का नित्य प्रति परिवर्तन रूप ही मनुष्य को नवीन चेतना एवं आकर्षण प्रदान करता है जो उसके इस बोझिल जीवन में आनन्द लाकर उसे उसकी अग्रिम दिशा की ओर उत्साह एवं जोश के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। नित्य नवीनता, नूतनता एवं मौलिकता ही परिवर्तन है जो मौलिकता ही परिवर्तन है जो रचनात्मकता की आधर भूमि है। मनुष्य जीवन प्रकृति की अनमोल देन है जो मनुष्य को उसका जीवन एक अमूल्य उपहार के रूप में मिला है। यदि मनुष्य प्रकृति के नियमों के अनुसार जीवन प्रक्रिया पूरी करता है तो वह इस अमूल्य उपहार के महत्त्व को बनाए रखता है। परन्तु यदि मनुष्य अपनी जीवन प्रक्रिया प्रकृति के नियमों के अनुसार नहीं अपनाता अर्थात वह मनुष्य जीवन से छेड़छाड़ करता है तो जीवन रूपी अमूल्य उपहार के महत्त्व को कम कर देता है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध इसी विषय पर केन्द्रित है। इस लघु शोध में नशे से ग्रसित किशोर छात्राों का नशे में लिप्त होने के कारणों का अध्ययन किया गया है ।

प्रस्तावना

आज नशा एक सामाजिक बुराई के रूप में तीव्रतापूर्वक गति कर रहा है। नशे से हमारा अभिप्राय उस उत्तेजक पदार्थ के सेवन से है। जिनसे मनुष्य को अपनी शारीरिक, मानसिक गतिविधि पर नियन्त्राण नहीं रहता। विद्यालय में इन पदार्थों का पदार्पण बहुत घातक है परन्तु यदि छात्रा इस बुराई के सम्पर्क में आते है, तो उनके भविष्य पर प्रश्न चिन्ह लग सकता है । किशोरावस्था में बालक के विकास की गति तीव्र होती है, जो बालक नशा रूपी राक्षस के सर्म्पक में आता है, तो यह राक्षस बालक को इसकी बुराई की तरफ ध्यान नहीं देने देता अपितु अपनी ओर आकर्षित करता है। बालक जब इसे अपनाता है तो उसे इसका भयानक छिपा हुआ रूप नहीं दिखाई देता, जिससे वह इसे स्वीकार कर लेता है। नशा रूपी राक्षस बालक के भविष्य में रुकावट खड़ी कर देता है। छात्रा जीवन में नशे का प्रयोग समाज के लिए बहुत बडी समस्या है क्योंकि यदि छात्रा इन बुराइयों से ग्रसित होगा। तो समाज भी इससे प्रभावित होगा। तब हम एक अच्छे समाज का गठन नहीं कर पाएँगे।

किशोरावस्था के लिए आंग्ल भाषा में ऐडोलेसेन्स शब्द का प्रयोग किया जाता है, इस शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के क्रिया पद एडोलेसीअर से हुई है, जिसका अर्थ होता है वृद्धि होना। इस अर्थ में किशोरावस्था को अत्यधिक वृद्धि और विकास की अवस्था जाना व समझा जाता है। वृद्धि व विकास के सभी आयामों को लेकर इस अवस्था में बालक और बालिकाओं में आश्चर्यजनक वृद्धि, विकास और परिवर्तन दृष्टिगोचर होते है। विभिन्न प्रकार की महत्त्वाकांक्षाओं तथा बुनियादी आवश्यकताओं की उचित पूर्ति और संतुष्टि एक किशोर के लिए बहुत अधिक महत्व रखती है। अपने आप व वातावरण से समायोजित या कुसमायोजित होने की चाबी एक तरह से किशोर की महत्त्वकांक्षाओं और आवश्यकताओं की संतुष्टि या असंतुष्टि पर बहुत कुछ निर्भर करती है। इस संदर्भ में किशोरों को अपेक्षित मार्गदर्शन तथा परामर्श सेवाओं की बहुत अधिक आवश्यकता आ पड़ती है। ड्रग वह पदार्थ है जो मनुष्य एवं जानवर की बीमारियों की पहचान उनके रोकथाम के लिए प्रयोग किया जाता है। उपरोक्त दिए गए तथ्यों के आधर पर हम यह कह सकते है कि ड्रग एक ऐसा पदार्थ है जो मनुष्य एवं जानवर के शरीर को मानसिक एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है। परन्तु कुछ ड्रग इस प्रकार के है जिनका नियमित एवं अधिक मात्राा में उपयोग मनुष्य को उसका गुलाम बना सकता है। मनोरंजक ड्रग का प्रयोग मानव द्वारा मानसिक सन्तुष्टि के लिए किया जाता है। कुछ मनोरंजक ड्रग को कानून द्वारा मान्यताएँ भी प्राप्त है। जिन्हे सांस्कृतिक रूप से स्वीकार किया गया है। परन्तु इनका प्रयोग आयु अनुसार एवं सीमाओं को ध्यान

*सहायक प्रौफेसर, शिक्षा विभाग (युनिवर्सिटी स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग), पंजाब युनिवर्सिटी, चण्डीगढ़
**प्राथमिक अध्यापिका, राजकीय उच्च स्तर विद्यालय, मनीमाजरा (पंजाब)

में रखकर किया जाए इसके लिए कुछ नियम बने है।

हम उस मनुष्य को नशे की लत से ग्रसित कह सकते हैं जो किसी ड्रग को नियमित रूप से लेता है। तथा उसके पश्चात वह अपने मानसिक संतुलन पर नियन्त्राण करने में अपने आपको असर्मथ पाता है। तथा अपने कार्य–कलाप को अपने सार्मथ्य के अनुसार नही कर पाता तथा समय पर ड्रग का सेवन न करने पर वह अपने आपको परेशानी की अवस्था में पाता है, तथा उसकी प्राप्ति के प्रयास को प्राथमिकता देता है।

समस्या कथन

किशोरावस्था के छात्राों का नशे की लत से ग्रसित होने के कारणों का अध्ययन ।

समस्या की उत्पति

जब मैने विद्यालय प्रांगण में विद्यार्थियों को नशे की हालत में पाया तो एक अध्यापक के रूप में मुझे यह देखकर अत्यन्त दुख एवं आश्चर्य हुआ। अपने शिक्षण कार्य के दौरान मैंने कुछ छात्राों को इस आदत से ग्रसित पाया। इस आदत के फलस्वरूप उनकी शिक्षण प्रक्रिया तो प्रभावित होती है लेकिन उनका शारीरिक विकास भी प्रभावित होता है। विद्यार्थियों की इस हालात को देखकर नशे की लत से ग्रसित छात्राों पर अध्ययन करने की ओर ध्यान गया। नशे की लत के कारणों को जानकर उनका संभावित हल ढूंढने के उदेश्य के लिए इस अध्ययन की आवश्यकता महसूस की गई। विद्यार्थी देश का भविष्य होते हैं। विकास की नींव छात्रावर्ग हैं। यदि छात्रावर्ग किसी दोष से ग्रसित होगा, तो भविष्य में विकास की योजनाओं को पूरा करना संभव नहीं है। इस तथ्य को सामने रखकर छात्राों पर अध्ययन का विचार आया, जिसके लिए प्रयास किए गए।

अध्ययन के उद्देश्य

1. छात्राों में नशे की प्रवृत्ति के कारणों को जानना।
2. ग्रसित छात्राों के अपने सहपाठी के साथ किए जाने वाले व्यवहार का अध्ययन करना ।
3. नशा खरीदने के लिए संबंध्ति आय स्त्राोत का अध्ययन करना ।
4. परिवार तथा अपने आसपास के ग्रसित छात्राों द्वारा किए जाने वाले व्यवहार का अध्ययन करना ।
5. ग्रसित छात्राों के प्रति अध्यापक के दृष्टिकोण का अध्ययन करना ।

अध्ययन की सीमाएँ

शोध्कार्य के लिए समय व ध्न के अभाव के कारण एक ही विद्यालय के छात्राों को चुना गया। इसमे 6 से 12 के छात्राों को लिया गया। जिनका सम्बन्ध् किशोरावस्था से है। कुछ छात्राों द्वारा अपने माता–पिता के सामने तथ्यों को प्रस्तुत करने से मना करने पर माता–पिता का साक्षात्कार छात्राों से गुप्त रखा गया । माता–पिता को भी प्रत्यक्ष रूप से यह नही बताया गया कि उनका बच्चा इस समस्या से पीड़ित है क्योंकि नहीं तो ये छात्रा अपने बारे में अध्ययन से संबध्ति तथ्यों का स्पष्टीकरण नही करेगें। अपने शोध्कार्य के लिए उनकी इस शर्त को स्वीकार किया गया, तथा कोशिश यह की गई कि उनकी इस लत से संबध्ति कारणों को जानकर उनके हल छात्रा एवं माता पिता के सामने रखे जाए ताकि बच्चे को उचित मार्गदर्शन मिल सके। जो छात्रा यह स्वीकार करते हैं कि उनकी इस लत से उनके माता–पिता परिचित हैं। उनका ही प्रत्यक्ष साक्षात्कार करवाया गया। नशा प्राप्ति के स्त्राोतों को भी जानने का प्रयास किया गया ताकि भविष्य में इन स्त्राोतों को खत्म करने का प्रयास किया जा सके।

संबन्धित साहित्य का अध्ययन

मानव के समक्ष अनेक समस्याएँ हैं तथा मानव इन समस्याओं का समाधन चाहता है। इसलिए अतीत में किए गए शोध् तथा विचारों को ध्यान में रखते हुए नवीनतम शोध् कार्य को आगे बढ़ाया जा सकता है। अतः समस्याओं का समुचित रूप से समाधन करने के लिये विषय से संबन्ध्ति अध्ययन पर विचार करना अत्यन्त आवश्यक है। इस दृष्टिकोण से प्रस्तुत अध्ययन का विशेष महत्व है। संबन्ध्ति शोध् के व्यवस्थित स्वरूप से तात्पर्य कि क्या प्रस्तुत अध्ययन अनावश्यक रूप से पुनः तो नहीं हो रहा है। इस आयाम में क्या कुछ पहले भी शोध् हुआ है। स्त्राोतों प्रक्रियाओं और उसके परिणामों के रूप में शोध् के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान समस्या के परिभाषीकरण, चयन विध्ि और निष्कर्ष के विवेचन की स्थिति का निर्धरण करता है। किसी भी शोध् प्रबन्ध् के लिए संबन्ध्ति साहित्य का सर्वेक्षण करना आवश्यक है क्योंकि इससे शोध्कर्ता को अपने शोध् विषय के बारे में

विस्तृत जानकारी मिलती है और वह अपने अध्ययन के दौरान किसी भी संभावित भटकाव से बच जाता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक शोध्कर्ता के लिए अपने विषय से संबन्धित उपलब्ध साहित्य की जानकारी होना आवश्यक है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए अध्ययनकर्ता ने नशे की आदत से सबन्धित जो अनुसंधन हुए है उनका पुनः निरीक्षण किया है। कुछ अध्ययन निम्न प्रकार से है।

नटबीम और एरो ने 1991 में अपने अध्ययन में पाया कि साधरणतय स्कूल जाने वाले छात्राों में विद्यालय में पाई जाने वाली असंतुष्टि एवं विद्यालय के प्रति लगाव में आई कमी के कारण तथा शैक्षिक संस्थाओं द्वारा दिये जाने वाले दवाब के कारण छात्रा नशे की आदत से ग्रसित हो रहा है। हाकिन्स, केटलन्स और मिलर ने 1992 में अपने शोध में पाया कि छात्रा के स्तर एवं विद्यालय द्वारा स्तर के अनुकूल बनाए गए मूल्यांकन चरणों में नकारात्मक सबन्ध छात्रा को नशे की आदत की ओर आकर्षित करता है तथा शैक्षिक स्तर की प्राप्ति का नशे की आदत से सीध सम्बन्ध है। वी. वी. एम. के विवेक ने बंगाल में 2000 में अपने शोध में पाया कि भारत में 30 पुरूष और 5 स्त्रियां नशे पर पूर्णतया आश्रित हैं कलकता जैसे बड़े शहर में लगभग 40,000 व्यक्ति नशे से ग्रसित हैं। जबकि कलकता में विभिन्न नशा मुक्ति केन्द्र हैं। इसके बावजूद नशे की प्रवृत्ति का निरन्तर विकास हो रहा है। वर्ष 2000 में 24 लोगों की मृत्यु का कारण नशा करना है। अब तक भारत में लगभग मिलियन लोगों की पहचान हो चुकी है जो हीरोइन का प्रयोग करते हैं। अर्न्तराष्ट्रीय नेरोटिक्स नियंत्राण बोर्ड, विएना, 2002 की रिपोर्ट में कहा गया कि भारतीयों की पसंद अफीम से हिरोइन की तरफ ज्यादा हो गई है। संयुक्त परिवार, माता–पिता के प्यार का अभाव, उन घरों में जहाँ पर माता–पिता जो काम करते हैं, जहाँ पर पुराने धर्मिक विचार व जीवन के मूल्य नगण्य है, वहाँ पर नशा ग्रसित होते है, ग्रसित व्यक्ति अपने नशे के लिए अपराध भी करते हैं। नशे की लत का राष्ट्रीय संस्थान (एन. आई. डी. ए.) 2004 में एक सर्वे के आधर पर पाया गया कि नशे से ग्रसित व्यक्तियों में एच. आई. वी., हेपेटाइटस बी और सीए टी. बी. की बीमारियां अध्कि पाई जाती हैं। परन्तु नशे से ग्रसित व्यक्तियों को पढ़ाई, परामर्श, इलाज और पुर्नवास कार्यक्रम से नशे से मुक्ति दिलाई जा सकती है। गेड्हन्स एट आल ने 2008 में मुंबई में उन किशोरों पर अध्ययन किया जो घुमंतू प्रवृति के हैं। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया जो सड़को पर आवारा किशोर के रूप में जाने जाते हैं उनमें नशे की प्रवृत्ति अध्कि पाई जाती है। इन किशोरों के घर एवं उनके घूमने के स्थानों पर अध्ययन करने पर पाया गया कि इन किशोरों में यह प्रवृति किसी दवाब, आत्मविश्वास की कमी के कारण पनपती है। समाजिक टिप्पणी में युथ की आवाज अप्रैल 4, 2008 में कहा गया कि नशा बढ़ता है तो उसके कुछ कारण हैं जैसे फैशन का बदलाव, जीवन मूल्यों का बदलाव प्रतिस्पर्ध नौजवान नशे से ग्रसित हो जाते हैं समाजशास्त्री के अनुसार पुराने वर्षों से अफीम, मोरफिन का प्रयोग होता आ रहा है। आज एल्कोहल का प्रयोग दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। 1996–97 में भारत में 75000 करोड़ एल्कोहल की खरीद फिरोख्त हुई। आंध्रप्रदेश में शराब पर पाबंधी लगा दी गई। जिससे 5000 हजार करोड़ का नुकसान हुआ था।

अध्ययन का प्रारूप

प्रस्तुत अध्ययन में किशोरावस्था से सम्बन्धित छात्रा जो नशे की प्रवृति से ग्रसित हैं। उनका अध्ययन किया गया है। छात्राों में नशे की प्रवृति के कारणों को जानने के लिए प्रकरण अध्ययन विध् िका प्रयोग किया गया है। छात्राों से सम्बन्धित सभी सूचनाएं क्रमब(रूप में एकत्रित करके उनका निष्कर्ष निकाला गया है।

प्रतिदर्श

अनुसंधन में सामाजिक मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिणक अनुसंधन में न्यादर्श का अत्यध्कि महत्त्व है। न्यादर्श समूचे इकाई समूह में से चुनी हुई ऐसी ईकाइयों का समूह है, जो पूर्ण इकाई का पर्याप्त प्रतिनिध्त्वि करे। प्रस्तुत अध्ययन में चण्डीगढ़ शहर के ग्रामीण इलाके के मनीमाजरा टाऊन के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 6 से लेकर कक्षा 10 तक के 20 छात्राों को अध्ययन के लिए चुना गया है। कक्षा 6 से लेकर कक्षा 10 तक के छात्राों का आयु वर्ग 14 से 19 वर्ष तक का है, जो कि किशोरावस्था से संबध् रखते हैं।

अध्ययन विधि की विस्तृत व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में प्रकरण अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया है। प्रकरण अध्ययन विधि से अभिप्राय उस विधि से है जिसमें अनुसंधनकर्ता व्यष्टि या इकाई से गहन पूछताछ करने का प्रयास करता है। वह वर्तमान

स्थिति, पिछले अनुभवों व वातावरण की शक्तियों जो व्यष्टि या सामाजिक इकाई के व्यवहार के लिए प्रकार परस्पर संबंधे है के विषय में, प्रासंगिक आकड़े एकत्रा करता है। घटकों व उनके पारस्परिक संबन्धित के विश्लेषण से अनुसंधयक को इकाई का व्यापक व समकालिन चित्रा बनाने में सहायता मिलती है। प्रतिरूप प्रकरण अध्ययन सामाजिक इकाई का गहन अन्वेषण होता है। सामाजिक इकाई, कोई व्यष्टि, परिवार, स्कूल, दोषियों का वर्ग, निर्गमपाती हो सकता है।

मार्गदर्शक सलाहकार व समाज सेवी किसी विशेष स्थिति या समस्या के निदान व उसकी चिकित्सा की अनुशंसाओं के लिए ऐसे प्रकरण अध्ययन करते है। वह किसी व्यक्ति से आंकड़े एकत्रा करते है और उसे अनूठा व्यक्तित्व मानकर उसमें अपनी अनुरक्ति सीमित व्यक्तियों में प्रतितिधि के रूप में अभिरूचि रखते हैं तथा सावधनी पूर्वक चयनित व्यक्तियों के वर्ग से संबंधित आंकड़े एकत्रित करते हैं। जिससे जिस समष्टि का वह प्रतिदर्श निरूपण करते है। उसके बारे में वैध व्यापकताएं व्युत्पन्न की जा सकें।

प्रकरण अध्ययन सर्वेक्षण से भिन्न नहीं होता परन्तु बड़ी संख्या में इकाईयों से कुछ घटकों की सूचना एकत्र करने के स्थान पर अनुसंधयक सीमित संख्या में निरूपित प्रकरणों का गहरा व गहन अध्ययन करता है। यह अपेक्षाकृत विस्तार में सकीर्ण परंतु प्रकृति में समग्र व अधिक सूचनादायक होता है और अधिक गुणात्मक आंकड़े प्रदान करने के लिए सर्वेक्षण विधि के संपूरक के रूप में प्रायः प्रकरण अध्ययन का प्रयोग किया जाता है।

निष्कर्ष

नशे की प्रवृति से ग्रसित किशोरावस्था के 20 छात्रों का व्यक्तिगत अध्ययन करने के पश्चात यह देखा गया है, कि छात्रा नशा अपने मित्राों के साथ के लिए करते है। उन्हें लगता है कि यदि वे उनके साथ नशा नहीं करेगे तो वे उनके अच्छे दोस्त नहीं बनेगे। उनको अपने मित्रों के साथ रहना अच्छा लगता है।

सभी प्रकरण अध्ययनों का सर्वेक्षण करने के पश्चात नशे के निम्नलिखित कारण सामने आए हैं।

परिवार में नशे की प्रवृत्ति– जिस परिवार में नशे की प्रवृति पाई जाती है उस परिवार के लड़कों में नशे की प्रवृति आने की संभावनाएँ अधिक होती हैं। क्योंकि वे अपने बड़ों को नशा करते हुए देखते हैं। उनको लगता है कि नशा करना कोई गलत कार्य नहीं है।

शीघ्र उत्तेजक होना – किशोरावस्था में छात्राों में लड़ाई–झगड़ा करने की प्रवृत्ति अध्कि शीघ्रता से जन्म लेती है। इस आयु वर्ग के बच्चे जल्दी उत्तेजित हो जाते हैं और नशा करने के पश्चात किशोरों को लगता है कि अब उनमें लड़ाई–झगड़ा करने के लिए अधिक शक्ति एवं चुस्ती है। अपने आपको शीघ्र उत्तेजित करने के लिए वे नशे का प्रयोग सहारा लेते हैं।

नए अनुभव प्राप्त करने की इच्छा – किशोरावस्था में छात्रों का विकास शीघ्रतापूर्वक हो रहा होता है तो उस समय छात्र में नए अनुभव प्राप्त करने की भावना का विकास भी होता है। विभिन्न प्रकरण अध्ययनों का सर्वेक्षण करने से पता चलता है कि कुछ छात्र नशे का प्रयोग नए अनुभव प्राप्त करने के उदेश्य से करते हैं।

बुरी संगत – विभिन्न प्रकरण अध्ययनों का सर्वेक्षण करने से पता चला कि कुछ छात्र नशे का प्रयोग अपने मित्राों के साथ मित्रता बनाए रखने के लिए करते हैं। उनके मित्र नशा करते है, इसलिए वे भी नशे से ग्रसित हैं। छात्र के अनुसार यदि वह नशा नहीं करेगा तो उसके मित्रा नाराज हो जाएंगे तथा उसके साथ मित्रता तोड़ देंगे। इस प्रकार नशे की प्रवृति का कारण बुरी संगत भी है।

जागरूकता की कमी – नशे के दुष्प्रभाव के प्रति अज्ञानता के कारण भी कुछ छात्र नशे का प्रयोग कर रहे हैं। उन्हे नशे का प्रयोग करना अच्छा लगता है, इसलिए वे उसके दुष्परिणामों के प्रति सचेत नहीं होते हैं। अतः नशे के प्रति जागरूकता के कारण किशोरावस्था के छात्र नशे का प्रयोग करते हैं।

ग्रसित छात्र के प्रति उसके सहपाठियों के विचार– नशे से ग्रसित छात्र के प्रति उसके सहपाठी सहयोगात्मक भावना रखते हैं। कक्षा के छात्र अपने सहपाठी को नशे की आदत से छुटकारा दिलाने के लिए उसकी मदद करने को तैयार हैं। वे उसके साथ दोस्ती करना चाहते हैं। अध्ययन कार्यों मे भी कक्षा के सभी छात्र ग्रसित छात्र की मदद करने को तैयार हैं। केवल कुछ ग्रसित छात्राजिनका परिवार नशे की आदत से ग्रसित है व जिस छात्र के माता पिता अपने बच्चे की नशे की आदत से परिचित होने के बाबजूद अपने बच्चे की नशे की आदत को लेकर चिंतित नहीं हैं। उन छात्राों के साथ कक्षा के अन्य छात्र दोस्ती नही करना चाहते। वे उस छात्र से दूरी बनाए रखना चाहते हैं क्योकि उनके माता पिता ग्रसित छात्रा से दूरी बनाए रखने के लिए

कहते हैं। जिन ग्रसित छात्रों के माता पिता का व्यवहार उनके साथ सहयोगात्मक हैं तथा कांउसलिग करने के पश्चात जिनके व्यवहार में थोड़ा बहुत परिवर्तन आया है उस ग्रसित छात्र के साथ कक्षा के अन्य विद्यार्थियों का व्यवहार सहयोगपूर्ण है।

ग्रसित छात्रा के प्रति उसके परिवार के सदस्यों के विचार– ग्रसित छात्र जिसके परिवार मे कभी नशे का प्रयोग नही हुआ तथा जिसका परिवार पढ़ा लिखा है वे अपने बच्चे की नशे की आदत को लेकर चिंतित है। वे अपने बच्चे को इससे छुटकारा दिलाने के लिए सभी प्रकार के प्रयास करने को तैयार हैं। वे अध्यापक एंव मुख्यध्यापक के बुलाने पर विद्यालय में समय–समय पर आते हैं। विद्यालय में उन्होंने अपने बच्चे की कांउसंलिग भी करवाई है। वे अपने बच्चे को नशा मुक्ति केन्द्र भी लेकर गए तथा उनके द्वारा बताए गए उपचार को उन्होंने सावधनी पूर्वक अपनाया। योग केन्द्रो में भी बच्चे को लेकर गए। इसके विपरीत जिन ग्रसित छात्रों का पारिवारिक वातावरण नशे से ग्रसित हैं। उन्हें अपने बच्चे की नशे की आदत की चिंता नही है। चाहे वह लड़की है या लड़का। ग्रसित छात्रा के परिवार के सदस्य उनके प्रति किसी प्रकार का सहानुभूति पूर्ण व्यवहार नही अपनाते है। उन्हें अपने बच्चे की नशा करने की आदत को लेकर कोई चिंता नहीं हैं। वे उन्हें किसी नशा मुक्ति केन्द्र मे लेकर नहीं गए। अध्यापक एवं मुख्याध्यापक के साथ उन्होने किसी प्रकार का सहयोग नही किया। काउंसलिंग का भी उन पर कोई असर नही हुआ। चिकित्सक द्वारा समझाए जाने पर भी वे किसी प्रकार का सहयोग नही करना चाहते। ग्रसित छात्रा पर अपने परिवार के सदस्यों का किसी प्रकार का कोई दवाब न होने कारण वे इस प्रवृत्ति में और अधिक लिप्त होते जा रहे है।

ग्रसित छात्र के प्रति अध्यापक के विचार– जैसा कि अध्यापक में सहानुभूति एवं सहयोग के गुणों का समावेश होता है। इसी गुण के समावेश के कारण अध्यापक अपने छात्रों के साथ सहानुभूति एवं सहयोगात्मक व्यवहार करते हैं। अध्यापक जिनकी कक्षा में नशे की आदत से ग्रसित छात्र हैं अपने छात्र को लेकर चिंतित हैं। उन्होने छात्र की नशे की आदत से छुटकारा दिलाने के लिए हर संभव प्रयास किए। उन्होंने माता–पिता को बुलाकर बच्चे की समस्या से अवगत कराया और समय–समय पर काउंसलिंग करवाई। कक्षा के अन्य छात्रों को ग्रसित छात्रों के सहयोग करने के लिए कहा ताकि ग्रसित छात्रों को उसकी इस आदत से छुटकारा दिलाया जा सके। अध्ययन कार्य में अध्यापक ने ग्रसित छात्र की हर संभव सहायता की। अध्यापक ने यह भी ध्यान रखा कि कोई अन्य छात्र ग्रसित छात्र के साथ सर्म्पक में आकर इस प्रवृत्ति से प्रभावित न हो जाएं। अध्यापक का सहयोग पूर्ण रहा है। नशे की प्रवृत्ति से छुटकारा दिलाने के लिए अध्यापक हर संभव प्रयास करने के लिए तैयार हैं। अध्यापक ग्रसित छात्र के प्रति किसी प्रकार का नकारात्मक दृष्टिकोण नहीं अपनाते, बच्चे की समस्या के समाधन हेतु वे सदैव तत्पर हैं।

ग्रसित छात्र के प्रति परामर्शदाता के विचार– विद्यालय की परामर्शदाता श्रीमति कुलविन्दर कौर का कहना है कि विद्यालय आने वाले छात्रों में नशे की प्रवृत्ति को रोकने के लिए मैं विद्यालय में नशे की प्रवृत्ति के प्रति छात्रों को जागरूक करती रहती हूं। उन्हे नशे के दुष्परिणामों से परिचित करवाती रहती हूं। छात्र के ग्रसित होने का पता चलने पर मैं उस छात्र का अध्ययन करती हूँ और उसे नशे की आदत छोड़ने के लिए प्रेरित करती हूं। सबसे पहले छात्र के ग्रसित होने के कारण का अध्ययन किया जाता है। माता पिता के साथ विचार विमर्श किया जाता है तथा अभिभावकों की सहायता से ग्रसित छात्र को नशा मुक्ति केन्द्र भेजा जाता है। समय–समय पर विद्यालय परिसर में चिकित्सक की मदद से वर्कशाप भी लगाई जाती है जिसमें छात्र एवं उनके अभिभावकों को बताया जाता है। कि किस प्रकार नशा छात्र के मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है।

ग्रसित छात्रों को पहचानने के पश्चात उन छात्रों को विद्यालय में होने वाली खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाता है ताकि उनमें आत्मविश्वास की भावना का उदय हो, उन्हें यह अहसास दिलाया जाता है कि उनका समाज में विद्यालय में परिवार में विशेष महत्व है, उन्हें विद्यालय में होने वाली सहयोगी कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाता है तथा उन्हें उचित अवसर प्रदान किए जाते हैं ताकि उनकी उर्जा का उचित प्रयोग हो सके, ग्रसित छात्र के साथ मित्रातापूर्ण संबंध बनाने का प्रयास किया जाता है। ताकि वह अपनी सभी समस्याओं को मेरे समक्ष रख दें, इसलिए ज्यादा से ज्यादा काउंसलिंग सेशन का प्रयोजन किया जाता है। ग्रसित छात्र कांउसलर के

समक्ष अपनी बातों को खुलकर रख सके इसके लिए मैं उन्हे विश्वास दिलाती हूँ कि उनको बातों को वह गुप्त रखूँगी। मैं उनके साथ विश्वास एवं मित्राता का रिश्ता कायम करती हूँ।

नशा मुक्ति केन्द्र के चिकित्सकों के विचार– नशा मुक्ति केन्द्र (आस्था) मनीमाजरा चण्डीगढ़ के चिकित्सक समय–समय पर विद्यालय में जागरूकता कैंप का आयोजन करते रहते है। जिसमे वे नशे के दुष्प्रभावों से छात्रों को परिचित करवाते हैं। नशा मुक्ति केन्द्र के चिकित्सक का कहना है कि नशे की आदत से ग्रसित छात्र को जितनी जल्दी हो सके चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवानी चाहिए, अभिभावकों को चाहिए कि वह अपने नशे से ग्रसित बच्चे को जितना जल्दी हो सके उतनी जल्दी नशा मुक्ति केन्द्र लाए नशा मुक्ति केन्द्र में ग्रसित बच्चे को मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य को सुधरने का प्रयत्न किया जाता है। नशा मुक्ति केन्द्र में ग्रसित बच्चे को मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य को सुधरने का प्रयत्न किया जाता है। नशा से मुक्ति के लिए चिकित्सक से ज्यादा ग्रसित बच्चा स्वयं अपनी मदद करता है। जब बच्चा मानसिक रूप से नशा छोड़ने के लिए तैयार होता है तभी इससे बच्चे को मुक्ति मिल सकती है। चिकित्सक का कहना है कि हम सबसे पहले बच्चे को नशा की आदत से छुटकारा दिलाने के लिए उसे मानसिक रूप से तैयार करते है। इसके लिए अभिभावकों, विद्यालय के अध्यापकों की सहायता ली जाती है। अभिभावकों एवं अध्यापकों की सहायता के बिना यह कठिन कार्य है। यदि ग्रसित छात्र नशा मुक्ति केन्द्र में अपनी चिकित्सा सुचारू रूप से करवाता है तो वह नशे की आदत से छुटकारा पा सकता परन्तु इसके लिए बहुत धैर्य की आवश्यकता होती है। ग्रसित छात्र यदि नशा छोड़ने का दृढ़ संकल्प ले तो इस आदत से जल्दी निजात मिल सकती है।

नशा खरीदने के लिए आय के स्त्रोत– नशे की आदत से ग्रसित 20 छात्रों के अध्ययन के पश्चात नशे की खरीदारी के लिए जो स्त्रोत हमारे समक्ष आए वे मित्रा मंडली एवं जेब खर्च हैं। अध्ययन में पाया गया कि ग्रसित छात्र अपने मित्रों के सहयोग से नशा प्राप्त करते है। कुछ छात्र अपने जेब खर्च का प्रयोग नशा खरीदने के लिए करते है। कभी–2 वे चोरी भी करते हैं। कुछ छात्र अध्ययन के अलावा पार्ट–टाइम कार्य करते हैं। जिससे हुई आय से वे नशा खरीदते हैं, जिन ग्रसित छात्रों के परिवार में नशे का प्रयोग होता है, वे छात्र अक्सर अपने घर से ही नशा प्राप्त कर लेते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थसूची

गेरेट, ई. एच. (1957): शिक्षा मनोविज्ञान के प्रयोगः दिल्ली, टूडे ऑफसेट प्रिंटर्स

गेरेट, ई. एच. (1980.81): शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी

नटबीम, डी. और एरो, एल, एफ. (1991): स्मोकिगंस और पीयूपिल ऐटीटयूट टूवर्ड स्कूलः द इम्पलीकेशन फोर हेल्थ ऐजुकेशन विद यंग पीपल। रिजल्टस फ्ररोम द डब्लयू, एच, ओ, स्टडी बिहेवीयर अमंग स्कूल चिल्ड्रन। हेल्थ एजुकेशन रिसर्च थ्योरी और प्रेक्टीस, 6, 331–338।

हाकिन्स, जे. डी., कैटलन्स, आर. एच. और मिलर, जे. वाई. (1992)। रिस्क और प्रोटेक्टिव फेक्टर फोर एल्कोहल और अदर ड्रग प्रोब्लम इन एडोलोसेन्स और अरली एडल्टहूड : इम्पलीकेशनस फोर सबस्टेन्स एबूज़ प्रेवेन्शन। साइकोलोजिकल बुलेटीन, 112, 64–105।

मंगल, एस. के. (2008): शिक्षा मनोविज्ञानः नई दिल्ली, पी. एच. एल. लरंनिंग प्राइवेट लिमिटेड

सरीन और सरीन (2008): शैक्षिक अनुसंधन विधियांः आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर

मंगल, एस. के. एवं मंगल. उमा. (2009): शिक्षा तकनीकीः नई दिल्ली, पी. एच. एल. लरंनिग प्राइवेट लिमिटेड

वेबसाइट

DRUG from wiki pedia the free encyclopedia jump to: navigation, search.

http://www.mental-health-matters.com/alcohol-addiction

http://www.leavedrugs.com/childhood-disorders.html

http://www.hopetrustindia.com/alcohol-rehabilitation-research-services-india.html

http://www.druglibrary.org/schaffer/library/studies/dacd/appendixa_3.htm

http://narconon.ca/blog/drug-addiction/definition-drug-addict.html

http://kidswebind.com/drugabuse.Php

http://www.YouthKiawaaz.com/2008/04drug-abuse-in-India

www.drugabuse.gov

http://www.ecoindia.com/viewsdrugs.html.